RESEARCH PAPER | Hindi | Volume : 4 | Issue : 11 | November 2014 | ISSN - 2249-555X

Hindi Ke Prachar- Prasar Me Sinema Ki Bhumika

हिन्दी के प्रचार–प्रसार में सिनेमा की भूमिका

KEYWORDS: हिन्दी, अभिव्यक्ति, संप्रेषण, लोकप्रियता

Dr. Rajeshwer Lather

Assistant Professor,Department of Journalism & Mass Communication, A.I.Jat H.M. College, Rohtak (Haryana).

ABSTRACT हिन्दी सिनेमा की समाज में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय फिल्म निर्माता–निर्देशकों ने अपनी बेहतर प्रस्तुतिकरण से हिन्दी सिनेमा को शिखर पर पहुंचा दिया है। विश्व में सबसे ज्यादा आज हिन्दी भाषा की फिल्मों का निर्माण होता है। हिन्दी सिनेमा उद्योग ने भारत में ही नहीं विदेशों में भी अपना एक नजदीकी रिश्ता कायम किया है। देश–दुनिया में हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में हिन्दी सिनेमा का अहम योगदान है। करोड़ों रूपए खर्च करने के बाद भी जो प्रचार–प्रसार सरकार नहीं कर पाई उससे ज्यादा हिन्दी सिनेमा ने कर दिखाया है। आज स्थिति यह है कि हिन्दी भाषा आज अंग्रेजी के सामने तन कर खड़ी है और अहिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी की स्वीकार्यता बढ़ी है। स्पीलबर्ग की फिल्म जुरासिक पार्क ने भारत में जितना धन अपने हिंदी संस्करण से अर्जित किया वह इसके अंग्रेजी के मूल फिल्म से दोगुणा से अधिक था। हिंदी भाषा बाजार और मुनाफे की कुंजी बन रही है। आज हालीवुड के फिल्म निर्माता भी भारत में अपनी विपण न नीति बदल चुके हैं। उन्हें पता है कि उनकी फिल्में हिंदी में रूपांतरित होने के बाद मूल अंग्रेजी में प्रदर्शित फिल्म से कहीं अधिक मुनाफा कमा सकती हैं। पश्चिमी फिल्मों की ब्लाकबस्टर फिल्मों के हिंदी संस्करण की हमारे देश में जितनी खपत होती है वह अंग्रेजी संस्करण की संख्या से कहीं अधिक है। भारतीय हिन्दी सिनेमा का हिंदी भाषा की व्यापक लोकप्रियता और इसे संप्रेषण के माध्यम के रूप में आम स्वीकृति दिलाने में अहम योगदान है।

भूमिका :

हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाशा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाशा है। चीनी के बाद यह विष्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाशा है। लेकिन फिर भी इसका विकास नहीं हो पा रहा था। आज हिंदी की व्यापक लोकप्रियता और इसे संप्रेशण के माध्यम के रूप में मिली आम स्वीकृति किसी संवैधानिक प्रावाधान या सरकारी दबाव का परिणाम नहीं है। हिन्दी सिनेमा ने इसे व्यापार और आर्थिक लाभ की भाशा के रूप में जिस तरह विस्मयजनक रूप से स्थापित किया है। उसने आज इसके पारंपरिक विरोधियों व उनके दुराग्रहों का मुंह बंद कर दिया है। आज आर्थिक सुधारों व उदारीकरण के दौर में इस निजी पहल का जो चमत्कार हमारे सामने आया है इससे हिंदी भाषा अपने आप दुनिया भर के दूरदराज के एक बड़े भू–भाग में समझी जाने वाली भाशा बन गई है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में हिन्दी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देषों के विदेषी छात्रों ने इसकी पुश्टि की है कि हिन्दी फिल्मों को देखकर तथा हिन्दी फिल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिली है।

अभिव्यक्ति की शैली :

हिन्दी सिनेमा संवादों की परम्परा के साथ सीधे ही रंगमंच और तत्समय व्याप्त षैलियों से बड़ा प्रभावित रहा है। सिनेमा से पहले रंगमंच था, पात्र थे, अभिव्यक्ति की षैली थी। आजादी के बाद का सिनेमा सकारात्मकता, सम्भावनाओं और आषाओं का सिनेमा था। धरती के लाल, कल्पना और चन्द्रलेखा जैसी फिल्में उस परिवेष की फिल्में थीं। कवि प्रदीप जैसे साहित्यकार पौराणिक और सामाजिक फिल्मों के लिए गीत की रचना कर हिन्दी साहित्य का प्रबल समर्थन कर रहे थे।

फिल्मकार एवं अभिनेता राजकपूर संगीत से लेकर भाशा तक के प्रति गहरा समर्पण रखते थे। आह, आग, आवारा, श्री चार सौ बीस आदि फिल्मों में हिन्दी के संवादों में कहीं कोई समस्या नहीं है। इधर बिमलराय जैसे फिल्मकार ने बंगला संस्कृति और भाशा से श्रेश्ठ चुनकर हिन्दी के लिए काम किया और अपने समय का श्रेश्ठ सिनेमा बनाया। फिल्में हमराही, बिराज बहू, दो बीघा जमीन, परिणीता, देवदास, सुजाता, बन्दिनी आदि मील का पत्थर हैं। हम यदि इन फिल्मों को याद करते हैं तो हमें दिलीप कुमार, बलराज साहनी, नूतन, सुचित्रा सेन, अषोक कुमार ही याद नहीं आते बल्कि उनके दृष्य, संवाद और गीत मन–मस्तिश्क में ताजा हो जाते हैं। बाद में हिन्दी के साथ उर्दू का समावेष करके सिनेमा को एक नया प्रभाव देने की कोषिष की गयी, जो सफल रही क्योंकि उर्दू तहजीब की भाशा है। हिन्दी के साथ निरन्तर बने रहने वाले लेखकों, पटकथाकारों और निर्देषकों ने अपनी एक ध ारा का साथ नहीं छोड़ा। सत्तर के दषक में ष्याम बेनेगल और गोविन्द निहलानी जैसे फिल्मकारों ने अपने सिनेमा में भाशा और हिन्दी के साथ–साथ उच्चारणों की स्पश्टता पर भी ध्यान दिया। इसे हम मण्डी, जुनून, निषान्त, अंकुर, भूमिका जैसी हिन्दी फिल्मों में देख सकते हैं।

बिमल राय के सहायक तथा उनकी फिल्मों में सम्पादक रहे प्रख्यात फिल्मकार ऋशिकेष मुखर्जी का सिनेमा भी भाशा एवं हिन्दी के स्तरीय प्रभाव के अनुक. ूलन का सिनेमा रहा है। उन्होंने सत्यकाम, अनाड़ी, अनुपमा, आषीर्वाद, आनंद, मिली, चुपके–चुपके, खट्टा–मीठा, गोलमाल जैसी अनेक उत्कृश्ट फिल्में बनायीं। चुपके–चुपके में हिन्दी भाशा–बोली को हास्य के माध्यम से एक कथा रचने में ऋशिदा को बड़ी सफलता मिली। फिल्म का नायक प्यारे मोहन जो कि परिमल त्रिपाठी से इस नकली चरित्र में रूपान्तरित हुआ है, एक–एक षब्द हिन्दी में बोलता है, वाक्य भी उच्च और कई बार संस्कृतनिश्ठ हिन्दी में बोलता है। ऐसा करके वह अपनी पत्नी के जीजा जी को परेषान करता है, आखिर क्लायमेक्स में रहस्य खुलता है और मजे–मजे में फिल्म खत्म हो जाती है। उसके बाद टपोरी भाशा भी हमारे सिनेमा में परिचित हुई जिसका एक विचित्र सा उपसंहार हम मुन्ना भाई एमबीबीएस में देख सकते हैं, उसने सिने–भाशा का सबसे बड़ा नुकसान करने का काम किया। उच्चारण, मात्रा और प्रभाव सभी स्तर पर इस तरह की बिगड़ी हिन्दी लगभग चलने सी लगी थी। मैनें प्यार किया, हम आपके हैं कौन, दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे आदि फिल्मों ने फिर हिन्दी की पकड को मजबूत किया। वर्तमान में हिन्दी फिल्में का बहुत बडा बाजार है। बहुत ज्यादा मात्रा में छोटे–बडे बजट की हिन्दी फिल्में बन रही हैं। गुलजार व जावेद अख्तर जैसे लेखक हिन्दी भाषा में संवाद व गीतों को लिखकर हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं।

बाजार की स्थिति :

स्पीलबर्ग की फिल्म 'जुरासिक पार्क' ने भारत में जितना धन अपने हिंदी संस्करण से अर्जित किया वह इसके अंग्रेजी के मूल फिल्म से दो गुणा से अधिक था। हिंदी भाशा बाजार और मुनाफे की कुंजी बन रही है। आज हालीवुड के फिल्म निर्माता भी भारत में अपनी विपणन नीति बदल चुके हैं। उन्हें पता है कि उनकी फिल्में हिंदी में रूपांतरित होने के बाद मूल अंग्रेजी में प्रदर्षित फिल्म से कहीं अधिक मुनाफा कमा सकती हैं। 'स्पाइडर मैन–3' हो, 'कैसिनो रायल', 'पाइरेट्स ऑफ द कैरेबियन' 'हैरी पॉटर एण्ड द आर्डर ऑफ फीनिक्स' जैसी फिल्मों के हिंदी संस्करण का प्रदर्षन अंग्रेजी फिल्मों के अनुपात में कहीं अधिक हुआ है। ' हिंदी में डबिंग' किए हुए अंग्रेजी फिल्मों के इन संस्करणों ने उन्हें देष में लोकप्रियता के षिखर पर पहुंचा दिया है। उदाहरण के लिए अँग्रेजी फिल्म 'कैसिनो रॉयल' के देष के कुल 427 प्रिंटस में से मात्र 130 प्रिंट अंग्रेजी में और बाकी 297 प्रिंट हिंदी व भारतीय भाशाओं में थे। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 42 करोड़ रुपये कमाए थे। 'हाई हार्ड–3' नामक फिल्म के हिंदी में 96 प्रिंटस बने जबकि अंग्रेजी में मात्र 50 प्रिंटस जारी किए गए । 'स्पाइडर –2' ने देष में 35 करोड़ रुपये अर्जित किए थे। इसके 304 प्रिंटस में मात्र 94 प्रिंटस अंग्रेजी में थे। 'स्पाइडर मैन–3' ने कुल 66 करोड़ रुपये का व्यवसाय किया था। अभिनेता जैकी चान की ऐक्षन व मारधाड़ वाली फिल्में भी धूम मचा रही हैं। हालीवुड की आज की वैष्विक बाजार की परिभाशा में हिंदी जानने वालों का महत्व सहसा बढ़ गया है। भारत को आकर्शित करने का उनका अर्थ अब उनकी दृश्टि में हिंदी भाशियों को भी उतना ही महत्व देना हैं। हमारे अंग्रेजी भक्त बुद्धिजीवी हिन्दी क्षेत्र को सदैव 'काउबेल्ट', 'हिन्दी बैकपाएर्स', 'हिन्दी हिन्टरलैण्ड' या पिछड़ी, सुप्त, गोबरपट्टी कहते नहीं अघाते हैं पर आज बा. जार की भाशा ने हिंदी को अंग्रेजी की अनुचरी नहीं सहचरी बना दिया है।

वर्तमान में भाषा :

हिंदी फिल्मों को मौजूदा परिदृष्य बहुत बदल चुका है हर तरह की फिल्में बन रही हैं विशयों में इतनी विविधता पहले कभी नहीं दिखाई दी। छोटे बजट की फिल्में

Volume : 4 | Issue : 11 | November 2014 | ISSN - 2249-555X

का बाजार भी फूल–फल रहा है। हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री में आजकल अंग्रेजी के लोग हिंदी फिल्मों के पटकथा लेखन का कार्य कर रहे हैं जबकि उन्हें हिंदी या उर्दू का समुचित ज्ञान नहीं है। हिन्दी फिल्मों की स्क्रिप्ट की दुर्दषा के लिए आज के अभिनेता ज्यादा जिम्मेदार हैं क्योंकि वे भी हिंदी या उर्दू साहित्य के जरा भी नजदीक नहीं हैं। उन्हें हिंदी पढ़ने में भी खासी दिक्कत होती है। इसका सीधा असर अच्छी स्क्रिप्ट पर पड़ता है। बॉलीवुड में "हिंदी फिल्में सही हिंदी में कम ही लिखी जा रही हैं। सरल हिंदी में लिखी पटकथा में भी बीच–बीच में अंग्रेजी षब्दों का उपयोग जम कर प्रयोग किया जा रहा है। ऐसी स्क्रिप्ट कम ही देखने को मिलती है, जिसमें अंग्रेजी षब्दों के मोह से बचते हुए षुद्ध हिंदी या उर्दू के षब्दों का उपयोग किया जा रहा हो।

निश्कर्ष :

हिन्दी सिनेमा के निर्माताओं को अपनी फिल्म में हिन्दी भाषा को पूरी तरह प्रयोग में लाना होगा। हिन्दी साहित्यकारों को हिन्दी फिल्मों के पटकथा लेखन, गीतों आदि की जिम्मेदारी देकर ही हिन्दी भाषा को उसके सही स्वरूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसलिए उन्हें अपनी पटकथा की भाषा पर विशेष ध्यान देना होगा। इसके लिए वे हिन्दी भाषा के विद्वानों से संपर्क कर फिल्म के संवादों को बेहतर बनाना होगा। इससे ही हिन्दी भाषा अपने सही मुकाम पर पहुंच पाएगी।

REFERENCE 1. हिन्दी, विकिपीडिया | 2. http://www.sahityashilpi.com/2010/10/blog-post_29.html | 3. विभिन्न फिल्मों का अवलोकन | 4. समाचार पत्रों, पत्रिकाओं से साभार |